

214
Kāli, Asta
mātrikā

आश्विन मास
1897 I
ASHA ACH

ॐ नमस्तुते ॥ बुद्धादीन् बुद्धसावित्री, बुद्धतुष्टिविद्वदिनी, चतुर्वर्ग
चतुर्वर्ग, चतुर्वर्गनायली ॥ चतुर्दशदिशि व्याप्ति, चतुर्गुणनायली, चतुर्
युक्विमानस्मा, सोमनाथायामहि ॥ प्रसक्तं जायमानं च, वनदारुययालि
ली, यीश्वर्यावतादवी, यीगीगीगीतवाससा, यीशामहानसी सुखा, यीशगन्ध
नलयीली, उद्भवगतलावस्मा, ययागक्षुवासिनी ॥ पूर्वयीति स्मितानिह्यं
बुद्धाकिनमास्तुतं ॥ १ ॥ माहेश्वरी महादेवी, माहामायातूर्वजनी, महादेव
रुमावृक्षा, महाहंकारनादिनी ॥ हिममोकिनितादहा, कपालगिरिगवनी

विभाच विभली च, अरु माला कर्मठली ॥ नागली कान सर्वांगी दक्षि, लन वनय
 दा ॥ १८ ॥ छि छि विनाशनी, सर्वथायी सुत्र श्वरी ॥ १९ ॥ गय श्वरी दवी, १९ गी
 गी ॥ २० ॥ गत वास सा ॥ २१ ॥ गत च नलिका गी, मूकार नर सिता ॥ २२ ॥ वानान स्यी महा
 दश, मान वृक्ष निवासिनी ॥ २३ ॥ आनय संहितायी ॥ २४ ॥ मोर श्वरी नभा ॥ २५ ॥ ॥ २ ॥
 बाल राय महा मोडी की मानी व कलायनी ॥ २६ ॥ व क व सुयत्री क्षना, सिद्ध गान्धर्व विग्र
 हा ॥ २७ ॥ व उवु जाग कि श्वरी ॥ २८ ॥ सिद्ध या यधनी श्वरी, क मानय मोर श्वरी ॥ २९ ॥ मय व व वा हि
 नि ॥ ३० ॥ व क व सुयलि क्षना, व क मी साव सा सिनी ॥ ३१ ॥ कोलाय र्या महा दश, वट वृक्ष

निवाहिनि ॥ ३२ ॥ आनययी ॥ ३३ ॥ यानि र्य, की मानी ॥ ३४ ॥ नभा सुग ॥ ३५ ॥ ॥ ३ ॥ **वे श्वरी श्वरी**
यां ॥ ३६ ॥ देव दृष्टी कना शिनी ॥ ३७ ॥ रुत्रि ॥ ३८ ॥ स्याम व श्वरी, गन का यत्रि संहिता, ॥ ३९ ॥
 व क ग दा रुक्ता, व उवु द विरु सिता, व क दाला महा की शा, नाना रुत्र श्वरी
 ॥ ४० ॥ रुत्रि यय गन्ध, सदा रुत्रि गन्ध, स्वर्ग मय श्वरी गान्धर्व, छि विनयन
 संहिता, अरु हास महा श्वरी, कदम्ब वृक्ष वाहिनी, गिष्ठ कि यी ० न सय, ना
 वायनी नभा ॥ ४१ ॥ **॥ ४ ॥ वावाही, धावकी गी, व क कलि महा दनी, दशु क**
 बाल गीरी वा, वावा क गे डवनी ॥ ४२ ॥ क या व मालिका माना, विविध यय सहिता

१ महासूक्त न मातृका कलिताग्नि समग्र १ मीनीक सकारि काद ॐ हा
 वारु वल्लु पिता १ शिन गकलितादहा दृष्टदय विना ॥ १ ॥ जय कीर्त
 न सखाना निम्न यगु समाप्तिता ॥ नागयी १० स्तिगानिर्ली कालत्र विनमस्तु
 ने ॥ ॥ ॥ गङ्गा वीसरु आदि कंकमाव ल विग्रहा १ सत्र सत्र वी सदादवी यवालीका
 कावत्त पिनी चतुर्भुजा विष्णु लादी कुग्रह ल विष्णु त्रिणी १ महावज्र वाद
 वी स्तिगा तु वावती गजा ॥ नाना यज्ञ नमादवी नाना वन विभुषिता १ ना
 नागन्ध विलिपीगी नाना वस्तु विनाजिता १ वत्रि यत्र महादेश कर्तुं अहं कथा

निनी ॥ वायुपी ० स्तिगानिर्ली गङ्गा वी नमास्तु ॥ ३ ॥ चाम लुव लुका
 वल्लु चतुर्भुजा विष्णु त्रिणी च अहं हा सव लुकी यव लु वल्लु नाशिनी १ दंष्ट्रा
 कनाल नकांगी कयिल केणी कथादनी कृष्णा गारिय निबोदी जिह्वा लल
 नली वली ॥ महायुगा नमातृका सुजा नष्टा सुल्लुनी १ असि वर्म यक्ष रुक्मा
 उम वरु वी गङ्गा विनी ॥ कर्तुं कयाल रुक्मा नि वनदार यस्तुषिता ॥ नन व र्मा
 रमादवी दीपि वर्म कटि स्तिगा ॥ हागलीका न सय र्क्ष अलि लु सदा प्रिया ॥
 सहस्र सूर्य सैकां गी वाम कूय प्रति प्रति दाला माला कलादहा गच्छिकाटि स

मयरा । सतव गाल शक्ति न्या । यत्रिवाली चला दसा । प्रकाशक महादेश । अष्ट
रुद्र वाहिनी । यी ० वरु वसी स्कानी । चामु अये नमा मुत ॥ १ ॥ महालक्ष्मी महा
दवी । लोरा ग्य गुल सुन्दरी । वैश्वर्य पाद कात्ररा । सिंहा सेनाय विस्मिता ॥ चतु रुजा
विसालाक्षी । शंख चक्र गताधरी ॥ चयवा हावक युवा । वस्त्रक गुल लक्ष्मी विनी ॥ वस्त्र
विन सर्वगी । यशमलि विस्मिता ॥ विविग्रय वस्त्र वस्त्र । वस्त्र गी भानु लक्ष्मी ॥ य
त्वा कृष्णायिलि दवी । सर्वस्व सव वाचली । सिद्धि गन्धर्व न मिता । सव विद्याध नात्रि
ता । दवी काठ महा दूक सहा वासु कलागम ॥ श्री भानु यी ० सी स्कानी । महालक्ष्मी

नमा मुत ॥ ८ ॥ ॥ ॐ नमो अर्थ ॥ वक्रायनी पीत वस्त्र रा । कमल वृक्ष वासु
रा

८ श्रीगणेशायनमः ॥ नित्यानन्दकरी वनारुयकरी, सोदर्यावन्ताकरी, निङ्गुताधि
लघानयावनगरी, यत्यकमाहृष्वरी, प्रानलेयावनयसपावनगरी, काशिपुनरध
श्वरी, किंकादहीकृपाविनम्रकैनेनी, माताश्रुर्नपुण्यश्वरी ॥ १ ॥ तानानन्दविदित
बलकरी, रुमाचनार्द्रकरी, मूकाहानविनम्रमानविलसगु ॥ वक्राञ्जलुमहानरी, काशि
नाउवृवावसेताउवृवनेः काशिपुनाधीश्वरी ॥ शिका ॥ २ ॥ योगनन्दकरी, निपुण्यकरी, प्र
मृगनिष्करी, चन्द्राकानिलशास्मानलहरी, जलाकनकाकरी, सर्वेश्वर्यकरी, वनारुय
करी, काशिपुनाधश्वरी ॥ शिका ॥ ३ ॥ कैलाशवलकंदलालयकरी, ज्योतीउमार्णकरी, कोमा

नीतिगमार्थवचलाकरी, उँकालविजाकरी, माकदानकपात, पाटनकरी ॥ काशि ॥ शिका ॥ ४ ॥
दस्यादस्यविरुतहावनकरी, इन्द्राउराअदनी, लीलाताटकसूत्रकलनकरी, विह्वानदीपान्क
री, श्रीविश्वसमनःप्रसादनैकरी ॥ काशि ॥ शिका ॥ ५ ॥ उविम्वर्जतस्वरी, विलकरी, मातात्रिपू
ण्यश्वरी, नादनीलमानकृतलकरी, नित्यानन्दानन्दश्वरी, नादनीलमानकृतलकरी, नित्यान
न्दानन्दश्वरी, शिका ॥ सर्वानन्दकरी ॥ दाशिवकरी ॥ काशि ॥ शिका ॥ ६ ॥ आदिकाकसमस
वर्णुतगरी, शंखप्रणकरी, कासीनाप्रिपूत्रश्वरी, तिनदरी ॥ सर्वान्करी सर्वनी, कासाकाश्रु
करी, मनीसवकरी ॥ काशि ॥ शिका ॥ ७ ॥ अविम्वर्जवर्णुनर्तघटिकादककनसंस्थितावा

म अमृतया, यथाधनवशा, सोलायेमाहवनी, रुकाशिरुकनी, दूतानसकनी ॥ कालि ॥
 का ॥ ६ ॥ चन्द्रकलितकटिउणिता, वानार्कवर्धुष्वनी, चन्द्रकाग्रीसमानकंतवधनी, च-
 न्द्राकुविम्बाधनी, मानावसुकपाशमकुलकनी, काशिपूनाधनी ॥ ७ ॥ ॥ सर्व-
 वकनीवनालयकनी विणायनी, ग्रीधनी, साकामाद्रकनी, नितामयकनी ॥ कालि
 ॥ शिका ॥ १० ॥ मूर्धुपुष्पसदापुष्प, हाकल्लयावर्त्तर, स्नानवैनाहसिर्ध ॥ ११ ॥ हि को द
 हि च पार्वति ॥ ११ ॥ ॥ रूगिणीमूनिनु, नेविनवित ॥ १२ ॥ मूर्धुपुष्पसदापुष्प ॥ १३ ॥

ध्वजमाध्यायनूगर्त, श्रीमन्नीलसत्रस्वर्गी, तानागदमतनेवक्रियतनिययप्रति ॥ श्रीमा
 तसाधकावाक्ममूकुरुसैसनाइत्थाय, वद्वयद्यासना, गिनमुगुक्कवर्धुष्वनी, मूरव, स
 रुद्रदलकमलकलिकानक, र्दमगुलमध्विकानाकनर्त, र्दसयी, भयविनिज
 पुन्र्द्विगुर्द्विनिर्ग, वनालयकनयद्यासीनल्लानानयमूदितमातस, वामानसूत्रकण
 किसंयुत, सहप्रदियसंकार्गुंकारुर्ध्व, नामपूर्वक, श्रीगुर्द्विमात्र, तस्यवामविर्ग
 गार्कि, धूर्धुमगुलाकाना, गनर्त्तदनिरानता, तमूर्धिसदृशी, गुर्वी, गुनसनुकमा

॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

नसी, ॐ क्लृप्तान क्रिया रुग्णं, ॐ कान्त्रुयिणी, वायुवीच्य भिकारं, स्मिता स्यां प्रियवा
 दिनी, नृपद्वयसू (ग) राक्षं, वनदा रुय भविणी, नाता वग्ग दग्ग युकां, सुखालं काल
 रुषितां, पुद्गलामग्रजां धर्वा, कथी नान्त गयथा धर्वा, सुवृण सहसं युकां, स्मन्तर्गना
 मयुर्विकां, ॐ निष्ठात्वा युवं युर्वी युजय यन्नमानस, अक्षमूखनामिकया, लंघयि
 यात्मकं, गंधं प्रीयुव वसमर्थयामि, क्वं आकाण्णत्सकं युष्मं, यं वाचात्सकं धूर्प, वं गजा
 त्मकं दीपं, वं ववृणत्सकं ने वायं, ॐ नित्यं अक्षयवानसं युष्मं, गत्या इकामर्तुं जयतु ॥

वायुवानन्दनाथ

यथा ॥ ॐ अमूकानन्दनाथानन्दं रुं वव, वायुवीच्यं वाधीया इकां युजयामीति, दण्वाली
 युजय, प्रणम्य यथा, अक्लान्तिमिनाम्भस्य क्लान्तिजनसलाकया, वडुवामीवित्तयन, ग
 स्मै प्रीयुव वनमः अखलमपुलाकालं व्यापित्तयन च वाचनं, गत्यर्ददलितं जन तस्मै प्री
 युव वनमः अन्नगजमसं रुतं, क्लिविषं सुकृता यदं, दिक्कायान्ननया रुक्ति, तस्मै प्रीयुव
 वनमः यायधसि कटूपाय, विशादारु स्ववृयिण, दीक्षयदिय तामुक्ति, सुस्मै प्रीयुव
 वनमः अन्नवनववस भविण, यन्नमानंद सदा निवात्मन्, विदमन्दमूण विहाविण,

अन्नं दसुखानन्दो अन्नानं दमगधयनं वा अन्नं दं गतं प्रेवक्ष्य यत् कलमस्य यन्ति ॥

सुगुणानन्दमयको
नलिमनदनाथक

इतिताम्हानिधितावि (नमः॥ ॐतिष्ठतुयुजा॥ ॥ ततस्मादहिनामन्त्रीविक्रयद्वय
वृषिणि, मूलादिब्रह्मनख्यार्कविगतनुसूयिणी॥ मूलाध्वरसत्रनित्यपिकोर्णनजसाः
निधिं, मूलविद्यामयीं कूलुलिनीं आत्मा, सुषुम्नवर्त्मना यत्र गजसिर्गमय्य तदमृताध्वर
या लालीकृतां वेगनामयीं विचिन्त्य॥ पूर्ववत् यश्च यवात्रीसंयुक्त, अजयामर्तुं जयतवा
यूनर्मूलाध्वरसमानयत्॥ ॥ यथा॥ यकागमानां यथ मययान, यतियया (नयाम्हा
यमानां, अन्तयदद्यामनूस्वयन्कि, आनन्दवृत्ताममर्लययद्य॥ ॥ सुधाध्वनासात्रेय
२ मूलादिब्रह्मनख्यार्क, कूलुआत्मायुस्रसत्रत् यक्तायानन्दनाथार्क सनकार्कनन्दमवव, कुमारान

नयुगवीरद्विगविने, ययश्च गितानीयूनवयिवसमायमरुसा, अवायस्वांरुमिंरुज
गतिरुमश्चस्ववलय, स्वमात्मानं कृत्वा स्वविगिकूलकन्दकुरुनली, ॐत्यनययनं कृत्वा
साक्षाद्वक्रमयारुवत्, नतस्यायाययूधानि, जीवन्मुक्ता रुवध्वरं॥ ॐतिष्ठातकृष्य॥ ॥
समूहवालयदवि, यद्वतस्वनमसुल, नभाविर्लरुवमात, यादस्यर्गक्रमस्वम॥ ॐति
मर्हीसंयाध, यस्यांरुमी विगगत, वहिर्गत्वाततादवीमुखयद्रावर्णवत्, कीस
वजतयियमूखायनमः॥ ॐतिमूर्खयद्राल्य॥ मृगकृष्णनसंगृह, ज्ञानार्थतीर्थजला

किंकि गच्छतु ॥ ध्यातुं कृत्वा मन्त्रं त्वां यथा दर्वीरु किं तां च यत्, तस्य पूजा विरुला, सोचहीना
 क्रिया यथा ॥ ततः पुनः विष्णु कर्णं कृत्वा, सुदृष्टो च समाचरेत्, दन्त धावनं काष्ठं समानीय, या
 थयत् यथा ॥ क्षीरं ददत् समुद्रं, दन्त काष्ठं महाकुलं, यद्देहि सावलं चर्चं, त्वमा धरि वन
 स्यात् ॥ ॐ ह्यनन दन्त धावनं कृत्वा, मूर्तिं कुरु न दनं यार्थं मखाहा ॥ ॐ तिमलिकां सलीलं सल्य
 म् ॥ सुवर्णं च त्वां लम्क कुलं दर्शकं वदत्वा, जित ह्वे जिना च म् ॥ मन्त्राय कर्षणं कृत्वा मन्त्रं
 नं समाचरेत् ॥ यथा ॥ अमुकं ध्यात्वा अमुकं दत्तं सर्वं कुलं दत्तं गायत्री तथ मन्त्रं नान मर्दं कलि

ध्या॥ ॐ तिसं कल्य ॥ कलत्रं कंजल विलिख्य ॥ तय युनूदवता याद यथा रुवाति नीर्धति सु
 र्यमपुलादकू समूदया समानीय याथयत ॥ यथा ॥ गंगवजं मूनवेव ॥ गंगवलि सन
 स्वति नर्मद सिन्धुका वलिजल सिन्धु सन्निधि कू ॥ ॐ तिविचिन्त्य गङ्गायन जिवाचम
 कुरु मूदया मूध्रिनि जिवाचमहि सिन्धु ॥ सकच्छिदानी संप्रदा मूलन जिनिर्मर्यावम
 ७ ॥ माता सूर्यमूर्खा रुवा गय्ययतु युनूदवता यवानुजगानि धि रंष्ट्रवमनूषान्
 दानवान् तय गय्ययतु वसदात् सकृत् ॥ याक्या वाक्यं गंगयं नि स्वावन्धनमाच

प्रतु॥ यथा॥ ॐ मलिधत्रलिवजनिमहायति सत्रत्रकनककंदरुट् ॥ ॐ नननिखाव
 धा॥ कूलयजुंयलिधाय तयत्रकनककंदरुट् स्वाहा ॥ ॐ तिरकायकिं कला मूलनगिल
 कंकयति ॥ ॐ तिज्ञानविधि ॥ ॥ गूथसंख्या ॥ यथर्मवेदिकीसंख्याविधाय ॥ गालीकी
 संख्यासमोवप्रतु ॥ यथा॥ विधायोदोवेदिकीसं गालीकीचतुष्टयप्रतु ॥ अकखोव
 दिकीसंख्या गालीकीतिशूलारुवत् ॥ पूर्ववत् आत्रम्य ॥ गत्रात्रमनंकयति यथा ॥
 गत्रादिहिरिहिलीला माययाकत्रयकाल्ययत् ॥ श्रीकंद ॐ यकोद्विन्नमूर्य ॥ रुट्

ॐ ति युन क रं य द्वा ल ॥ वे ला व ना य न म ४ मूर्ख ॥ गं स्व यां ग ला य न म ४ ना लिक था ॥ य
 न ना रा य न म ४ च कु ल ॥ अ मि ता रु वा ये न म ४ क र्ण था ॥ ना म का य न म ४ ना रौ ॥ य
 मा न्क का य न म ४ द्द द य ॥ वि द्वा न्क का य न म ४ नि व सि ॥ न न्क का य न म ४ वा द्म
 ल था ॥ ॐ ह्या व म नं क्त्वा, व क्त्वा लं य य श्र ति ॥ ॐ ह्या व म क्त्वा ना ली रं श्रीं क र्था त ॥
 य थ ॥ मा या वी ज न स दं गं वि क्ष य, वा म रु र्ज लं गृ ही त्वा, द द रु र्ज ना क्का य, हं र्ज व
 लं रं ॐ ति द्वि श्री य ज थ मूल नं य वि वा लं ज य त्, त त्वा म रु र्जा सु लि न थ ग लि ती
 द क वि न्दु रि र्द क रु र्ज ल मू ड या मूल म क्त न स्व मूर्ध नि स क वा लं म रि नि ॥ ॐ ॥

धवागुर्वीदव्यवाणीयाइकां तव्ययासि ॥ ॐ तिगुनून् प्रिगनर्य ॥ मूलमूचनल, श्रीयनदवर्गा
 तययामीति, यथगकासकथयता ॥ एवतव्यलं विषयमूलविद्यान, श्रीमद्वयतामी एक
 जटानीलसुवस्वगी यं वविगतिवारं विषवासकथय जलाइकाय, (भोतावाससीयनिषय, आ
 वम्यसूर्यार्धदत्ता, तामादियायनन्यनाकतकसुम, ध्यतायनाजितायूष्यातिनिद्रिष्य ॥ ७३३ दा
 दिष्टमण्डलवर्णिनी नित्ययेतन्यादिताये श्रीमदकजठये स्वाहा ॥ ॐ तिगिनर्य दत्ता, तन्मधु
 दवीविहाय ॥ रगवत्यकजठविमरु, एकजठये श्रीमदि, तन्नस्मान्यथादयात् ॥ तानाये वि
 मरु, मरुताये श्रीमदि, तन्नादवीयथादयात् ॥ ॐ यताया ॐ तिगयणीयथगकिं जहासं हा

नमोऽद्याहृदिसमानीय, मूलमर्पयनामगान्, जलयागं कवचत्वा, यागमग्नमागय ॥ ॥
 ॐ ह्रीं वक्षोदकं ह्रूरुट स्वाहा ॥ ॐ तिजलमले जलमभिषाय ॥ ॐ तजलं सर्वसयर्थार्थः किं
 विनामृतं जलतिद्विष्टं ॥ ॥ तनेव वा विना ॐ ह्रीं स्वाहति मलूनया दोषकाल्य कृणु कृ
 लकलासन सधुनजगमूद्रा नूयानूयथा सवाहकदत्वाः ॥ ॐ ह्रीं सुविष्टुधर्म सर्वयायादि
 नमः ॥ ॐ विकल्पमयनय ह्रूरुट स्वाहा ॥ यथा विधिप्राचम्य गणयी ० विचिन्तय ॥ यथा सग्न
 नं गणय संविन्य, गणकल्पदुमस्मिन्न ॥ तन्मूलमणिपी ० वनानामणिविरुषितं, नानालंका
 र्णमयैर्मूर्तिद्वयेष्वमणितं ॥ निवारिर्वैकुण्ठमसिद्धिमायमानानां निरुत्तरा ॥ यद्युद्विष्टगवामृण

वितां गमनामिष्टमण ॥ तन्मूलमणिवयद्वर्षा यथा कश्चानयागत ॥ ॐ ह्रीं मनिधवव
 जिनि सर्ववर्णक विह्रूरुट स्वाहा ॥ ॐ तिजिस्वार्धधर्म ॥ ॐ ह्रीं वक्ष २ ह्रूरुट स्वाहा ॥ जला हिषक
 नरुमिष्टमयत् ॥ ॐ ह्रीं सर्वविद्यानसावय ह्रूरुट स्वाहति ॥ नावावमूद्रया मूद्रागयक
 य ॥ यिविधविद्यानसावय ॥ ॐ यविगवेदरुमिह्रूरुट स्वाहति ॥ अतन्तुमिमरिममृतात ॥
 कामलकमलादिविष्टुवासनादिकमनायवि ॥ ॐ तथेननमलूनरुमोमणुलीविविद्यतया
 सनमृच्छायगणायवि ॥ कवि ॥ असनवकवि ॥ ॐ मनिधविविनिमहायति सववक्ष २
 मां ह्रूरुट स्वाहा ॥ ॥ वस्तुनिकवकाय निवधीया ॥ ॐ अ ४ ह्रूरुट स्वाहति यायकयाकाय

वाकविरुल्लभनं ॥ ॥ ॐ नमः पूषा कुरुवाजार्हतगतागतायसंमयक्रीवृद्धाय ॐ पूषा पूषा मद्रा
पूषी सुपूषा पूषा रुषितपूषा चयावकी ॥ ॐ कुरु स्वाहा ॐ त्रिपूषादिमनुमयं कृत्वा स्वर्गं दिव्यं
॥ नकाचन्दना ॥ नवाचनकूकूमवज्रपूषादि सुलिका ॥ ॐ ॐ ॐ सुवखवज्रवखवकुरु स्वाहाति
मनुनमं उल्लिख ॥ यथा शिका ॥ नक गुरुति मरुदल यद्ययुत्रययुत्रयुद्धातात्मकं ॥ गस्य
शिका ॥ यदीयामर्षी उल्लवहं यद्यिमरु शिका ॥ नमः पूषा कविरुयासि र्वाकुरु २ ॐ स्वा
दिनासा ॥ सदिर्गलिख ॥ एतद्युक्तयुनतावकचंदनगं रार्थादियी ॥ निधाययी ॥ मर्वयत् ॥
यथा ॥ मध्ययययविष्मगनायनमः ॥ कल्यवृद्धायनमः ॥ तन्मूलमगियी भयनमः ॥ ना

नामलिखानमः ॥ मानालीकालेशानमः ॥ मुनिशानमः ॥ दवशानमः ॥ वदुर्मासाश्रिभादमानागिवा
शानमः ॥ ॥ वदुर्दिश ॥ गवशानमः ॥ मूययनमः ॥ चिताश्रिवायनमः ॥ अमृनमः ॥ तातायुष्ट
दलेदवायादिकमन ॥ ॐ लक्ष्मी नमः ॥ ॐ सुवखयेनमः ॥ ॐ वखयेनमः ॥ ॐ यीयेनमः ॥ ॐ की
येनमः ॥ ॐ गान्धो नमः ॥ ॐ युद्धो नमः ॥ ॐ युद्धो नमः ॥ ॥ मध्य ॥ ॐ मरुथतासनायनमः ॥
ॐ ययय ॥ ॥ गदुयविमूलनमः ॥ र्शिकल्य ॥ र्शिकल्य ॥ यथाया ॥ यामं कमन
कीर्तिवकवर्षु नाहीष्वात्वा गदुहूतागिनाटु स्वदहं दग्धं विविन्य कीर्तिवीर्जयीतवर्षु
ददिविवि ॥ गदुहूतनवायुनारुसथासावयं ॥ ताताकं कार्वा ॥ यतवर्षु गिनसि विविन्य

मगाननद्वयं प्राविर्तु कृत्वा समस्तं गीतं नृपं विश्वं प्रावयत् ॥ आत्मानं वायु गतं
च धर्मं लीला विनीमयं आथ ॥ यथा गतं नृपं मगाननद्वयं विश्वं प्रावयत् ॥ अष्टका
दकायुधं आत्मा तद्वयं विटं काना ॥ यथा यथा विचिन्त्या तद्वयं विनील सन्निहं कानं आत्मा कृत्वा
नदी ऊरु सितां कर्तुं आथ ॥ कर्तुं यथा विगतां आथ ॥ आत्मानं गीतं विनीमयं आत्मा ॥ ॥
यथा लीला यथा दानां मृगमाला विरुषितां ॥ खलिलिम्बा दनीलीमां वाद्यवन्मृदुतां कटी ॥ नव
यौवन सम्यग्मां यथा मृदा विरुषितां ॥ समुखं वदुनवा ॥ वरुणं मुखमवव ॥ यानि मृदुति वि
ख्याता मृदा यथा नमस्कृते ॥ वदुर्जाल लज्जितां महारीमां वनयदां ॥ खलु कर्तुं समायु

द्वयं ॥ कयाला राने सयुक्तं सवायानियुगमन्त्रितां ॥ विष्णु एकजटी आथ ॥
अहिरा ॥ एवमुक्तं विटं कृत्वा अर्धं कया नमाचव ॥ यथा स्ववामजिकाणयु
गतयसा धर्मं कयाला दियार्ण निभायतय मूलविशया विमलययसा पूर्य वि
दनवजयुषा कृतानि नि ॥ क्रियायां गीतं सूनवायु मृमृ ॥ अदि कृवददादि
यनम ॥ ॐ क्री निवस स्वाहा ॥ ॐ क्री निवायवमट् ॥ ॐ क्री कवचाय कूं ॥ ॐ क्री
॥ ॐ क्री ॥ अमुकयय ॥ अर्धं गतं विविन्दस्य तद्यथा मूलविशया जहा गता
दियां मयं कृत्वा ॥ ति अर्धं विमयया गायामादिकं कृत्वा ॥ यथा मूलविशय

नमो नमो सायुध ~~वायु~~ वायुमायूर्य गण्डा एतस्य उगवा न जयन सुवृत्ता
वी एतस्य एवावृत्त जयन दक्षनागमायुध वृत्तयः ॥ एवमयथाग किं या गाय
नैकं नमः ॥ ॥ यथा निजसिं अग्रा सुसमयन नमः ॥ मुखवृत्तं कुन्दसन
वृत्तं दिदवता नमः ॥ मूलं ॥ ॥ जीवी नमः ॥ ॥ वृत्तं गक यन नमः ॥
गार्थसर्वीर्ष कीलकायन नमः ॥ यूनसुखे वमन नमः ॥
नाम नमः साकूर्या ॥ ॥ तथा ॥ जीवक जयन नमः ॥
कैवली दक मध्वमा नमः ॥ ॥ उयजट अना ॥

अर्धदमनीकाम्या, विजलाकयमर्दिनी, वकवीजवि
 यवउडयवृया, उग्रगफ्नियातिनी ॥ उग्रयायकयकक
 नीक्षणी, उग्ररुमगलुषिता ॥ महायाययगमनी, उग्रकमेका
 उच, वलुग्रमवउनायिका ॥ वलुग्रवउयनीचली, यवउचउनादिनी ॥ ३३ ॥ या
 वली, वलुग्रवृयागिदलिका ॥ स्वप्तिनीगुलिनीयना, दूकाववाववादिनी ॥ ३४ ॥ या
 वलुग्र, महाककुलक्षविणी ॥ स्वप्तिनीमुखिनीच, वायिनीचकिणीयना ॥ ३५ ॥
 निष्ठा, गेलिनीकृदिनीमही ॥ बालयतधरावती, महाककालक्षविणी ॥ ३६ ॥

तवादिनी ४

क्षविणीवर्णिनीसुमा ॥ मण्डप्रदिकारुक्ता, वक्रियायप्रिदलिनी ॥ ३७ ॥
 वलुग्रमकुलक्षविणी ॥ दूकादिनीगुलिनीच, धीकावकर्दिक्षविणी ॥ ३८ ॥
 महागुलिमनादिनी ॥ यिगुलिनीदलिनीच, धनू४कलक्षविणी ॥ ३९ ॥ यद्यकु
 यात्रिजातसदाधता ॥ यद्विनीकूर्मिनीक्षत्री, गंधकारीमगमिनी ॥ ४० ॥ रुत्रिकातामले
 सुममालिनी ॥ तयावर्लधरावती, यवमानन्ददायिनी ॥ ४१ ॥ यववणीमहावीडी, रुद्रव
 ॥ ॥ धामवाभयवीवामा, स्ववरीदिगुवीधृति ॥ ४२ ॥ गभवरीरुवरीसोम्या, यवनादि
 ॥ तवविल्वववाहीग, सूर्यास्याविधिभनना ॥ ४३ ॥ सुखमूर्ति४०, लसुर्ति, सुखमूर्ति

उभयया ॥ सा ममूर्तिर्महानन्दा, यरा मूर्तिर्महानरु ॥ ७७ ॥ क्षीवमूर्तिर्महाविष्णा, महाकण्ठकूलीनिः
कायताकिनीदयार्बरा, मूलप्रवृत्तिनीध्वरी ॥ ७८ ॥ मार्कण्डेयमण्डलवती, सिद्धवतिलकप्रिया ॥ स
कसहस्रमूर्तिषु, यममूर्तिर्महेश्वरी ॥ ७९ ॥ महार्कसवतीविष्णु, मतीविमलसिंहिका ॥ महाखण्डमती
सिंह, मतीवीवमतीधरा ॥ ८० ॥ अहिमतीमार्तगी, कतकनमहामती ॥ विविधविप्रितमती, वीवसिंहम
ती ॥ ८१ ॥ रौवसिंहमतीहान, महानग्निमतीहृण ॥ महाकाकनसंभानि, महाशंभवीविका ॥ ८२ ॥
महादिव्यागम्या, महामीनामहासूरी ॥ महावलिनीदिव्यांगी, महाविश्वयूरुमिजा ॥ ८३ ॥ महानन्दी
कागजा, सिद्धियागिनीरामिनी ॥ गगनाम्बामहारुही, महानन्दरुनीहृण ॥ ८४ ॥ महावलीमहालाया,

यणी ॥ यदुकिनीवयदुकी, गंधकालीमतीगिनी ॥ ८५ ॥ कैवर्हिनीवयकाव, महाकामिनीराव
नरुकीध्वरी, धृष्टार्दुणीयुधिनीका ॥ ८६ ॥ कालिनीगगलीव, मायागन्धविणीनदी ॥ वि
नामहामाया, सूरुगनन्दिनीधवा ॥ ८७ ॥ उमानन्दाप्रियानन्दा, महानन्दासूनन्दिनी ॥ शंभवीवि
नन्दा, मीनजाम्बाधवाधिनी ॥ ८८ ॥ वलिनीधोद्विणीदिव्या, सिद्धान्तविद्वज्जासृता ॥ अम्बिकावलिका
म्बाव, साकास्याधुजनाध्वता ॥ ८९ ॥ विशाधवीवलिनीव, मावृतासर्ववीसृता ॥ उल्कामुखीलाकमुखी
वर्णुणीवर्णुमालिका ॥ ९० ॥ रीमाननाशूनमाख्या, विशाकावयवर्हिनी ॥ उन्ननीसून्दीस्राहा, सूक्ष्म
मण्डलवाविणी ॥ ९१ ॥ कलावाविकलानाव, खगमस्याखगवाहिनी ॥ शृंगलीयूगवजा, धामकावी

वकोलिकी ॥ १८ ॥ थानिष्ठसिद्धिथानिष्ठ महाथानीसुथानिजा ॥ सिद्धिथानीर्गवथानी महासंखा
 म्थानिका ॥ १९ ॥ दिव्यथानीमहादिव्य थानीयद्वाक्यथानिका ॥ महारुद्ररुद्रणीव महासंखाविणी
 निवा ॥ २० ॥ महावक्रवृषीवीडी महाकृतान्तनागिनी ॥ महर्षिमरुदनीव कालसंखावद्याविणी ॥ २१ ॥
 कालवापिमहावीडी वायुलीकलकलिनी ॥ वीववृषीवीवयूका कालाग्निरुथयाविणी ॥ २२ ॥ महा
 रौद्रवसंखावीवकाकुलविहाविणी ॥ संखानकालिकारुद्रा महारुद्रविद्यातिनी ॥ २३ ॥ सुद्धिकालीम
 हादिव्या मिहिकालीमहाकला ॥ संखानकालिकाशामा कालग्रसनकालिका ॥ २४ ॥ वक्रकालीम
 हाग्रयकालीयमसमार्गिका ॥ मृत्कालीरुद्रकाली महामार्द्रुकालिका ॥ २५ ॥ महाकालामि

कालीवयवमार्ककालिका ॥ कालकालीमहाद्यावा वधुरौवकालिका ॥ २६ ॥ मलुकालीहंसका
 ली कमकालीवृणमरी ॥ खानकालीवक्रकाली वक्रुंकावकालिका ॥ २७ ॥ महागगणकालीव प्रक
 हासावकालिका ॥ महागद्यकालिकाव महावलान्तकालिका ॥ २८ ॥ अद्धिकालीसिद्धिकाली रासा
 धीहंसकालिका ॥ वधुरासाकालिकाव रासाणमवकालिका ॥ २९ ॥ रासाथगीमहारासा रासाग
 गणकालिका ॥ रासामवकालिकाव रासामकाठकालिका ॥ ३० ॥ सूर्यकालीवंदकाली अग्निकाली
 सूर्यीमहावायुकालीधामकाली मनःकालीसुधा यणी ॥ ३१ ॥ सर्वकालीसिद्धिकाली निवालीवायुका
 लिका ॥ कालिकादंष्ट्रिणीमूडा मूडासार्वलिहानका ॥ ३२ ॥ कयालमूडाकालघ्नी मूडासाकालनागि

नीसमयघीद्यानमूडा, विकवालावरामिनी॥१७॥ श्रीकृष्णलाहमूडाव, निवाकयालमूडिकायाति
मूडायवामूडा, महामूडावद्यादगी॥१८॥ किंयिणीधीवलीकाली, पुलिछीडाशिकायरा। वध्याम्वारणी
लिनीद्यावा, कवतीखटकीमनी॥१९॥ नडकीद्विथिणीहाना, अठकीकागर्ध्विका। अग्निवकावयिग
क्षी, वमणीवमणीजवा॥२०॥ गमकर्णगजकर्णव, वामुगुग्णकर्णिका। विश्वरूपीयसनामाला
कमातायराविनी॥२१॥ वक्राननावक्रवला, कथिलादूतनारुया। रुग्नासारुगकर्ण, संध्यावा
जमातवा॥२२॥ शुक्रध्वरीसावदावजल्यध्वरीवयार्धती। कुलालीरुविणीमाया, महामायावज
मिका॥२३॥ नकाम्बावमहाकाली, घण्टलीविधिलीमृग। इडकणीकिन्नमका, महालक्ष्मीविकागम

॥ मार्तण्डागिवदूतीव, सिद्धाम्बायद्रमल्लिना। यद्रयानीनिवावाक्ष, सुलिंगरुगमालिनी॥२४॥ वज्रुखा
प्रिजटाक्षाना, प्रिगकिर्म्यककातथानकयालिनीमालिनीव, कामिनीकामलाक्षसा॥२५॥ मरुध्वरी
उग्रकाली, लक्ष्मीमाली। उमालिकी, कुलालीवक्रवधाम्बा, कामलक्ष्मीमनारुवा॥२६॥ जिनमाताजि
ननुदाव, सावदादसवाहिनी। महामयीवाचसूत्रमा, सूरुकाचमनारुवा॥२७॥ अग्निवाम्बायवाम्बाव
तगलेलाग्रवागिनी। शुक्रकन्दवरुवांगी, शुक्रकंदलक्षविणी॥२८॥ दंष्ट्रिणीविकटास्याव, शिव
दूतीघनरुनी। सूर्यमालाविरुवांगी, सूर्यगदविरुविणी॥२९॥ सद्यश्चिन्नगिनामाला, आया
दानावलीविनी। वक्रवक्रावक्रुजा, वक्रयादागणध्वरी॥३०॥ प्रिकाणविन्दुनिलया, यंयक्र

मनिवासिनी। मूलमार्गमिताशुक्राशुक्रावद्विवाधिनी॥८८॥ मूलाध्वानिवाध्वानावद्विवा
उक्तालया। म्मासाकासगिजीवाग्रहणीवद्विर्मय्या॥८९॥ वल्लीतनुसमूहानावप्रसासाइ
लालया। कालवक्रउमीजाना। निउमाउमनागिनी॥९०॥ वात्यालीमद्यमालीवसूचि८१मस्यवर्द्ध
नी। शुक्रावाववकावावउकावेकावद्विणी॥९१॥ जीकाववीजद्वयावजीकावाम्बववासिनी।
सिन्दूवागुणवर्द्धिवसिन्दूवतिलकधिया॥९२॥ म्मासाववध्वीजावलाकवम्माविराविनी। गजा
ननरुयमूखावासरास्यायकानना॥९३॥ चित्रिकावनवाविष्मायनमरुविद्याविणी। सहयास्यास
हयाकीसहप्रमुजध्विणी॥९४॥ सहप्रयादवाविष्मायनमार्गप्रवाधिनी। काटिवक्राकाटियादा

यनगागमनविग्रहाऽ

उजकाटिधृतधिया॥९५॥ मरुमावीविनिद्रायतन्ममृत्पविनागिनी। वंदमधुलसंकागमवंदमधु
लवागिनी॥९६॥ मृगिमादिगुणयतामृत्पुलाकामद्विणी। मृत्पुसिद्धिप्रदासायाइस्यदानवद्या
तिनी॥९७॥ मृनादिनिधनायुष्टिध्वर्द्धनरुलप्रदागिदिकर्णुयतीकागमसवत्कमूदलावना॥
९८॥ रुतरुग्रुविग्रहा। रुतरावनराविनी। वाममार्गवतावामागिववामाम्बवासिनी॥९९॥ मं
गलावसूणीलावध्वनमार्गप्रवाधिनी। कृत्तिकावक्रजकृत्तुमातामालितिमानदा॥१००॥ कालाम
खीवगवती। उमापुक्कामरुध्वनी। पुराकामावयद्विध्विणीवाववाविनी॥१०१॥ कममधुलम
ध्वका। कमणीवतयातिका। वाक्कीवीडीपुहवतीवेकूवीधागद्विणी॥१०२॥ नावसिदीगकवती

रुगस्यारुगिनीरुद्या ।

वामुग्रवर्द्धिकारुण्य। रुंयाविहारुगमस्याव, महाराग्यामहावला॥१०३॥ यागिनीयागिणीवम्या, व
तकषुकक्षविणी। गजवर्मधृतामीव, व्याध्ववर्मकटिचिता॥१०४॥ सिंहवर्मनितम्बीव, कालवर्मरु
वीयका। विग्नलक्ष्मीजगद्धात्री, जातद्वयस्रवृद्धिणी॥१०५॥ सर्वमद्रमयीविशा, सर्वमद्राद्रवावना
। माहमण्डलमधुका, माहमण्डलवासिनी॥१०६॥ कुमावजननीधृष्टा, सुमुखीयायनागिनी। मानल
क्ष्मीवधरुगा, गीतलागीलसंयुता॥१०७॥ दिव्यसंरुनकालीव, यातालाष्टकालिका। मृदुधजा
वातधजा, यमधजनिवाविणी॥१०८॥ अथवाजितावजुजिता, वामणीवामनागिनी। शुक्लशुक्लमुखीव
मा, विकलात्रीकल्पविणी॥११०॥ वाजमातावजयुजा, वाक्यमातावजयुजिता। निवामरुक्ताविकाव, वि

खा १

गोमहविद्युता॥११॥मनानूगकोविनीव,विश्वगीयाजताविणी।वक्रावक्रप्रियाधावा,कवाला
ककवाद्यना॥१२॥कर्णुमाटीवयागगी,विनयानसुवासिनी।कलंकमालिनीकान्ता,ना
वायणीउगङ्गाहिता॥१३॥मृदुहृदयिनीरुसा,वज्रयुधालिमालिनी।यत्तुयथमनीमह,मा
तामहयुकागिनी॥१४॥ब्रूयवीललजिह्वा,धामानाभवनीगवी।मवीविकालाकालघ्नी,का
लवर्षविरुषिणी॥१५॥धामानकालिकाधूम,कालीविश्वविमर्दिनी।संग्रामकालिकाकाल,व
यनीवाववादिनी॥१६॥द्वालर्त्तनीकवालीव,धूमकालीवगप्रिया।श्रमवानकवालीव,वडीरु
वनमालिनी॥१७॥कलिकानककालीव,माहणीहृदयिनीगला।यातालिनीयायदवा,याता

लक्ष्मीतिनीतिनी॥११॥जावावनाविणीबोडाया, गर्हसूरुनकालिका, सप्तवक्रावगुथाग, श्वरीप्रह
 मिनामता॥११॥मृगनीचस्रभासाहा, भ्रमार्गममहाद्वारा, आवगकालिकादारु, कालीमलायका
 लिका॥१२०॥आकर्षकालीआकर्षा, शक्तिनीनयकालिका, यवमार्कमहाकाली, नयकालीसुवाधि
 ता॥१२१॥रक्तवधारक्तसद्या, कमलालयवागिनी, र्यवया, श्वरीयाग, वक्रणीवक्रदक्षिका॥१२२॥
 गमकमृवीविजलाकी, नन्दरिडाजितानद्या, मनानमनीमहादद्या, कववीवनिवासिनी॥१२३॥कववी
 वग्ममनम्मा, लक्ष्मीवनवरीयुहा, युहामिनीगिरिसूता, गणनाथजयकवी॥१२४॥वधुसुवनिल्ली
 व, वधुसु धनुषाविणी, वक्रकैकार्सेलमा, विष्णुकैकालतृमिता॥१२५॥महामदकालिकाव, म

हारीषणकालिका, कन्दपृथ्वियाभामा, गलककसुमधिया॥१२६॥स्वयंरुद्रसुमा^{त्री}का, स्वयं
 रुद्रसुमाग्रया, स्वयंरुद्रसुमानन्दा, दूतीमदसमाग्रणी॥१२७॥वग्मावलोहिनीवाकी, खटकीकि
 यिनीकूनी, वजकीवालिनीवाली, क्षमीक्षमाधनयदा॥१२८॥कैवरीरुतकीकोली, बालिनीकप्रिमी
 नटी, यक्रिणीधाकणीगूडी, धीवलीवर्मकाविणी॥१२९॥मार्तंगीमर्हकीवेग्मा, वायकीसानकीखवा
 ।वाउलीधजिनीवग्मा, महामलयकजागुकी॥१३०॥महाकमनकालीव, कालकीलीवकालिका, महागग
 लकालीव, एकराषावकालिका॥१३१॥मनरीकालिकावूय, कालीकनककालिका, गद्यकालीमहाकाल
 कालिकावक्रकालिका॥१३२॥सर्पुर्कैश्वरीकाली, राजवाजश्वरीसुता, महागमलकालीव, रायाका

लीवथागिनी॥१२३॥उक्कश्वरीमहाकाली,महाशूलायकालिका,भागिनीकालिकायवी,वनइग्नीवन
थिया॥१२४॥मार्तगीमदिवामहा,नवमंगवतासदा,गवरीगभवरीलेला,गवणगततत्यवा॥१२५॥वस
लावावृणीधवी,मरुणीमरुगमिनी,उर्द्धकलिनीकामास्या,वक्रकलिनीगर्दिनी॥१२६॥उद्यकालीवदका
ली,कालीघीसिद्धिकातथा,धर्मकालीहानकाली,गविनीकालिकायवा॥१२७॥लीलावतीकालिकाय,की
मतीकालिकातग,कूलिकाकालिकायाण,कूंकानावावकालिका॥१२८॥महासिद्धिकवीयामा,सदावा
मयवाविणी,कंकालगावगवरी,महायिहवनश्वरी॥१२९॥कूंकानकालिकायाका,कालिकाशुभ्र
विंका,महाशुभवकालीव,महाकालिका॥१३०॥नादिनीकालिकामायी,स्वामिनीनामकालिका

हामिनीकालिकायाणी,कालीशुवणमाहिणी॥१३१॥रुद्रिकालीश्रितिकाली,संज्ञकालिकाकवा,हं
सकालीयमकाली,कालग्रसनकालिका॥१३२॥विद्यानकालिकाकाली,रुमरुधजकालिका,ककट
धजकालीव,गमूधजकालिका॥१३३॥मयूवकदिनीकाली,हंसधजविवासिनी,कासवापीमहाका
ली,वधुवधुश्वरीस्मृती॥१३४॥कालिकाकलगीव,महामदनवाविणी,विन्धवासिनय,रुणी,वीनालि
यनिद्रुजिता॥१३५॥वीरश्वरीकालिकाव,महाकृतानकालिका,वक्रवक्रश्वरीकाली,कालाग्निकालिकाय
वा॥१३६॥रुक्माविणीकाहूकीव,नामाश्ववदसुता,श्रयर्षाप्रियतातावा,उग्रतावाकलीकिनी॥१३७॥वा
र्त्तिकालिकाववाही,ववाहवदनायना,श्रुधिनीश्रुधिनीकाली,संज्ञिनीभादिनीकवा॥१३८॥

कवचीवविलासिनी ॥ ४

जिह्मिनीजयदाउंजी, जगदंयाजगत्सु ॥ १७९ ॥ जाकिनीवाकिनीकाली, + लाकिनीसाकिनीगण ॥ १८० ॥ का
किनीलाकिनीगीला, याकिनीधरासिनी ॥ अलिमालचिमागमनी, महिमासुदायिता ॥ १८१ ॥ ह्रीनित्य
कालीवलिता, लंबेनीसानगमिनी ॥ कंकानतावली, सदायिहवनश्वरी ॥ १८२ ॥ भगवतवासिनीबोडी
धाराधाराततागिता ॥ सृष्टिमित्यनसंहार, काविणीविष्णुभविणी ॥ १८३ ॥ शिमागमतिसेवावि, ब्रह्मवन्द्य
निवासिनी ॥ मधुकुसुदिनीशुक्ला, रुकिमानसवासिनी ॥ १८४ ॥ जनीजनिताजननी, जयमाहगणेश्वरी ॥
ब्रह्मविद्याब्रह्मवशा, ब्रह्माकुटाटियायिणी ॥ १८५ ॥ वामादाववामावामा, नगदक्षिणकालिका ॥ सैकादि
णीवामवणी, टंकावीविद्वन्ध्वरी ॥ १८६ ॥ मूककणीविद्वयाक्षी, जगदानन्ददायिनी ॥ सैकश्वरीवसैका

व, वक्रमागमीदूसाविणी ॥ १८७ ॥ सहस्रकाटिसूर्यानी, गजसातजनासिनी ॥ सहस्रकाटिसामानी, अमृता
प्रावणीप्रदा ॥ १८८ ॥ सुकाद्यायागिनीशुक्ला, सदानतामृतप्रदा ॥ सकारिणीतिमूखुम्बा, प्रियवानवला
चना ॥ १८९ ॥ सप्तस्वगीयगमयत्री, सावित्रीसंगलश्वरी ॥ वाग्मादिनीकणहरी, कर्मवन्द्यविभावनी ॥ १९० ॥
वर्णेश्वरीवर्णमयी, वर्णमालाविलासिता ॥ शिलाकजननीगमकी, मान्यागमगमसिनी ॥ १९१ ॥ यंत्ररुत
प्रियानित्या, यंत्रयिहोऽययुजिता ॥ गङ्गबुधिणीशुक्ला, शकागमजबुधिणी ॥ १९२ ॥ गन्धबुधिणीरु
म्भातु, यवनस्यर्णबुधिणी ॥ नसबुधिणीताथय, यंत्ररुतसुबुधिणी ॥ १९३ ॥ सप्तरीबुधिणीयुष्म, इन्द्र
सर्पिसुबुधिणी ॥ यन्त्रकालिकाकाली, जयदधवप्रदा ॥ १९४ ॥ इन्द्रासासिद्धिदायीव, नाकसीका

किं नीतया । जयवाग्यवरी जीर्णी, विशाखसि यवप्रिता ॥ १७३ ॥ शिववसे वरी ज्ञाना, काली कानयसे व
 नवी । वीरनयसे वरी दवी, यशसे व विमिदिका ॥ १७४ ॥ संयत्यु दारसे वरी च, मार्गसे व विमार्गिनी । जय
 प्रीसे वरी काली, मनात्मा दनसे वरी ॥ १७५ ॥ हवसिद्धि ययनार्हि, लाविणी दानवान्नि की । मूर्धु
 नीयुर्मुमना, पूर्वदवयुजिता ॥ १७६ ॥ मूर्धुयाय वतानिया, सदावा न विवाविणी । मूर्धुवा विरुगदा
 प्रीव, सदसदा श्रितायणी ॥ १७७ ॥ काली कानय काली च, सर्वज्ञानप्रदानदा । याग्यवरी महा
 वधु, मदी दाममहायणी ॥ १७८ ॥ हवि मिति वसंदाव, मृनात्या राम कालिका । युक् काली विश्व
 माता निर्वाणयव वरी ॥ १७९ ॥ ॐ ति ग्री यवमंगला ॥ स्कार्यनाम सहस्रक । स्तुतामदाय निव

द, मलायातक नागनी ॥ १८० ॥ मरुमलायदिष्ठानी, विश्वणी विश्वद्विणी । दामाणी वागथाधावा,
 मरुमन्दवसनि रा ॥ १८१ ॥ यदकनतनदिय, मिन्धनाति यथमिना । माननकाटि तीर्थनी, मनुकाटि
 जयवने ॥ १८२ ॥ धनूनी काटि दानन, विप्राणी काटि राजने ॥ काटि काटि रामनमय साजन्म काटि
 मू ॥ १८३ ॥ मही कांक्षनसंयुक्ती, सकक्षीयादि सागरी । दत्ताच वाव वासर्वातु, यत्कल्ललरुगध्व ॥
 १८४ ॥ तत्कल्ललरुगसार्ध, रुवानी कीर्तनामूर्त्त । मूर्त्तम्याश्च तवम्याश्च, रुगायाम्बावर्द्धन ॥ १८५ ॥
 कूजवाथगनी वायि, यतिवर्षा युवावयि । प्रकायं विनयद्वी, धूयादियविमादिन ॥ १८६ ॥ यशयकन
 संकीर्ण, वलि दानपूवकर्ता । साधु वयूजयद्वी, शुक्लासननविनयगू ॥ १८७ ॥ जन्म काटि सरुख

७. यत्प्रायसमयाङ्कितं ॥ अनन्यतमायने, वाङ्मार्थलक्ष्म्यं ॥ १०७ ॥ आयुनावायमायाति, धर्मका
 मार्थसाकृति ॥ १०८ ॥ आत्मानवाप्ताति, विवावल्यानमंगय ॥ १०९ ॥ वदसुख्यवागवा, नवम्यासावदा
 त्सर्वसर्वसिद्धिलक्ष्म्यं, यूपत्यासकर्मकूलं ॥ ११० ॥ ययी ० सदाह, तीर्थक्षेत्रमादिकं ॥ अणवद
 वतासिद्धा, उलायवर्तकानना ॥ १११ ॥ १०२ ॥ गङ्गागमादिगङ्गाणि, वदेयीवागसाधका ॥ सर्वतयेवतिष्ठ
 ति, ~~यथद~~ यथदसुवनायक ॥ १०३ ॥ य ० वामसहस्रं, सर्वदायनिवर्द्धनी ॥ हिंसकांयतकृष्णा ॥
 ४ यिगवाहृतयुतना ॥ १०४ ॥ कृत्वयहायगकिन्या, ययान्यइसुवतस ॥ जकिन्यावाकसाधावा, यवा
 ययीककाजना ॥ १०५ ॥ सिद्धकायविनश्रुति, ०० त्याह्यायवमग्वरी ॥ सरुवीतिनतगु, यथदतिष्ठ

तगृह ॥ संप्रमजयदं सय, सुखागपुनविनश्रुति ॥ आयुष्मान्धनवान्कृत्वा जायतसुखग ॥ सुखी ॥
 १०६ ॥ तयामन्तर्जलनगा, कृतायासीमवासन ॥ सकावर्द्धनदवगी, उद्धारयतिनिधित ॥ कीर्त्यास
 युआयवान्, सुखाग्रया ० यत्य ० १०७ ॥ १०८ ॥ सुखरुवतिसाधवी, सर्वरुद्धमवाप्नुयात् ॥ आयद्वाननाम
 धावकलियुगमहत ॥ स्मृतवायुनेमस्काया, सर्वदवमयीयसा ॥ १०९ ॥ सेवेयालयतविश्वं, सेव
 विश्वयसुयत ॥ सेवसेवतकाल, सेवविश्वमयीयवरी ॥ ११० ॥ सुखरुवतिसानका, किमलक्ष्यमहीतल ॥ वा
 र्कसोखीतिनावाका, यत्यमार्कलरुद्धं ॥ यस्यावकापुमखिल, कीर्णार्थकइकायत ॥ १११ ॥ कालय
 सनवर्गा, कालसंकर्षणीवृम ॥ ११२ ॥ रुद्धयत्याजगत्सर्व, महकाकामदूयिणी ॥ यासान्ककावि

ली काली कालसंकर्षिन् नमः ॥ यद्वक्त्रं सुदूयासा यद्वक्त्रं नूर्वधनी ॥ जगद्भासवतानिद्या काल
संकर्षणी नमः ॥ या समस्तकालदूया नानाकानामहात्मना ॥ सा कालप्रसनवता कालसंकर्ष
णी नमः ॥ ललितकमानामयर्थं रीषमोयासुरेववी ॥ ~~महातृप्तिहमावृत्ता~~ महातृप्तिहमावृत्ता का
लसंकर्षणी नमः ॥ ललितकमानामयर्थं रीषमोयासुरेववी ॥ तां कालप्रसनवतां कालसंक
र्षणी नमः ॥ अलातवक्रवद्विधं कीर्णार्थं जाम्यतयया तां कालप्रसनवतां कालसंकर्षणी नमः
॥ वक्राशुकाटिलकाणि रुससात्कवृत्तयया तां कालप्रसनवतां कालकालीनमाम्यहं ॥ नो
मिकालीमहद्व्यां यक्षतावतिरुद्धणी ॥ कीर्णार्थया कवाद्विधं वक्राशुर्ध्वदमालिनी ॥ २०१ ॥ अ

अनादिनिर्गुणकाली काटि सूर्यगतयरां ऐलाकवद्वणवतां मंगलां प्रणमाम्यहं ॥ २०२ ॥ अक्रका
ली मंगला ॥ सिद्धिकाली जयध्वनी ॥ वद्वि कीर्णवर्णी ॥ काली ॥ सुवनध्वनी ॥ २०३ ॥ श्रीमंग
लां महाकालीं निर्वाणयददायिनीं ॥ भाददां वाक्त्रां नित्यां नववक्त्रां यनीरुज ॥ २०४ ॥ ॥
ॐ तिथीलाहावावमहातृप्तिं गतिसाहस्रमहाधर्म्मसिद्धिं तायां निवद्यावती सा प्रवक्ष्यामीति का
लिकादद्या ॥ सहस्रनामप्रतिबद्धसंसार्य ॥ ॥ समस्तगुणगुणनराधिप ॥ ३ ॥ ॥ पुरमस्तु ॥

१ श्रीप्रियवसुन्दर्ये नमः॥ ॥ श्रीदय्यावाच॥ प्रियवा प्रियवती च सुन्दरी यत्र वासिनी । श्रीमालिनी
वसिष्ठावा, महाप्रियवसु ~~वा~~ वासिनी ॥ १ ॥ यकटायास्तथायका, स्तथायुक्ततायना ४ संयदा
यकमा ४ कोला, निर्हृतीति वरुणमा ॥ २ ॥ यत्रायत्र वरुणमा ॥ ३ ॥ तथा कामध्वनीधुरा । रुग्मालिनीत
थाकिना, रुग्मवद्विवागिनी ॥ ४ ॥ महाविश्ववतीदूरी, त्वविताकूलसुन्दरी । नित्यानीलयताका
व, विजया सर्वमंगला ॥ ५ ॥ कालीष्टमालिनीविद्या, वासिनीधुरगकला । धूर्तुःस्थावतर्थविद्या, का
मणीमादिनीतथा ॥ ६ ॥ विमलावा वृणदवी, जयिनीकूलरुववा । सर्वध्वनीतथाकोनै, त्रागणीस
र्वकामिनी ॥ ७ ॥ सिद्धध्वनीतथायाग, इर्गमहिषमहिनी । स्वप्रावतीगुलिनीच, मार्तगीसुवसु

न्दरी ॥ ८ ॥ महाकालीमहायय, विद्यव्यामहायनी, प्राणविद्यातथेकाक्षी, वैकयादामर्हाकूष्मा ॥ ९ ॥ वा
मालिवातथाशुष्ठा, स्वययावा वृणगिनी, प्रियवृणिलिनालोनी, गोरी ~~विन्ध्य~~ विन्ध्यनिवागिनी ॥ १० ॥ कारि
नीनादिनीरुद्रा, ललितावद्विपिणी । सर्वसंयत्करीतात्रा, रुवानीविश्ववासिनी ॥ ११ ॥ आठध्वनीमहावि
द्या, कथितातवरुवती । उयासकानुमहायव, गुरुवैकनीमाधुना ॥ १२ ॥ मन्त्रध्वन्युक्वचवध, मन्मथसुद
नकर्त्र । वायामुद्रामुनिनादी, गङ्गसुन्दरीगिवस्तथा ॥ १३ ॥ क्रोधरुद्रानकल्येव, यक्षमीयविकीर्तिता
। इर्वासायाससूर्यश्च, वलिष्ठध्वन्यागव ॥ १४ ॥ उर्वीवक्रिर्यमल्येव, नैमथववृणस्तथा । वायुर्विष्णु
सूर्यरुद्र, रुववागलयस्तथा ॥ १५ ॥ अनिरुद्धारुद्राआ, दक्षिणासूरिर्वचव । वटुककूलयल्येव, वा

वर्गगासवस्वती॥१३॥अष्टमीगणपःप्रमलः३३मलः४कलरुववः॥अष्टमीगणपःप्रमलः३३मलः४कलरुववः॥
 प्रवव॥१४॥अष्टमीगणपःप्रमलः३३मलः४कलरुववः॥अष्टमीगणपःप्रमलः३३मलः४कलरुववः॥
 वरुह्यतिर्यदः॥अष्टमीगणपःप्रमलः३३मलः४कलरुववः॥अष्टमीगणपःप्रमलः३३मलः४कलरुववः॥
 सुथा॥कनी॥तथासीगावत्रकिनी॥सयराभाप्रोयदीवः३३गणपतिरुमा॥१२॥युध्यदभासराव
 द्वा॥वाणः४कालःप्रमदः४केसासः४क्षीनसिधुः३३दधिहिमवसुथा॥२०॥नावदष्टमहावीरःक
 धितावद्रसाधकाः४महाविद्यायसादनः३३स्वस्वकामः३३रुयदा॥२१॥अष्टमीगणपतिरुमा॥२१॥
 स्ययसवर्गा॥नित्ययुजाः३३रुलंगः३३ददामिवत्रमीयित॥२२॥अष्टमीगणपतिरुमा॥२२॥

लघियः शुभचिह्नानिनालम्बा, महालकाकुलम् ॥ २३ ॥ चक्रसंकर्तकं वस्य, शुभसंकर्तकम् ॥
नामसंकर्तकं शुभम्, महासंकर्तकम् ॥ २४ ॥ समयावाप्तसंकर्त, महालका ॥ यः शुभवर्त ॥ जयशुभा
चर्नलम्बा, शुभवावायकस्य ॥ २५ ॥ प्रवर्णयति वाच, सा मता मानयः ॥ २६ ॥ तिथीतल्लुचुगम
लेनित्यसर्वसमाय ॥ २७ ॥